# ५. चेतना

*– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम*

**पठनीय**

**'वसुधैव कुटुंबकम्' विषय पर समूह में चर्चा कीजिए और प्रभावशाली मुद्दों को सुनाइए :–**

**कृति के लिए आवश्यक सोपान :**

● इस सुवचन का अर्थ बताने के लिए कहें । ● आज के युग में विश्व शांति की अनिवार्यता के बारे में पूछें । ● पूरे विश्व में एकता लाने के लिए वे क्या कर सकते हैं, चर्चा कराएँ ।

**अरुण** : इस विशाल वट वृक्ष के नीचे बैठकर कितनी गहन अनुभूति होती है । त्रिपुरा के शिल्पकारों ने बाँस की कितनी सुंदर कुटी बनाई है !

**डॉ. कलाम** : मैंने इसे अमर कुटी का नाम दिया है ।

**अरुण** : अमर कुटी ही क्यों ?

**डॉ. कलाम** : यहाँ बैठकर मुझे कुछ ऐसी अनुभूति होती है, जो अमर है। यहाँ बैठकर संसार की सारी घटनाएँ किसी अनदेखी शक्ति की लीला भर नजर आती हैं । मन, आकाश और अंतरिक्ष का विन्यास एक जैसे लगते हैं ।

**अरुण** : जी, लेकिन मन का संसार तो बहुत ही अव्यस्थित और बड़ा भ्रांति भरा है । भावों, अनुभूतियों और कल्पनाओं के कैसे-कैसे बहुरंगी स्वरूप देखने को मिलते हैं-कभी यह तो कभी वह इसके विपरीत, यह संसार तो बड़े व्यवस्थित रूप से संचालित होता है ।

**डॉ. कलाम** : यह संपूर्ण ब्रह्मांड तो निश्चित व्यवस्था के अंतर्गत निरंतर गतिशील रहता है परंतु संसार के विषय में तो ऐसा नहीं है । यहाँ तो बड़ी अफरा-तफरी है । जिस प्रकार सृष्टि के बाह्य संसार के संचालन के लिए कुछ निश्चित नियम हैं, जैसे-गुरुत्व का नियम और वायुगतिकी का नियम; ठीक उसी प्रकार मन के आंतरिक संसार के संचालन के लिए भी निर्धारित नियम हैं । इन नियमों की समझ से जीवन के अनुभवों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है । एक बार अपनी आत्मा के संपर्क में आ जाने पर मनुष्य मानो इस ब्रह्मांड के केंद्रबिंदु के रूप में क्रियाशील हो जाता है ।

**अरुण** : संपूर्ण ब्रह्मांड का केंद्रबिंदु बनना तो सचमुच एक महान अनुभूति है लेकिन इसका अभिप्राय क्या है ?

**डॉ. कलाम** : ब्रह्मांड के केंद्रबिंदु के रूप में क्रियाशील होने पर आप यह अनुभव कर सकते हैं कि यहाँ संयोगजन्य कुछ भी नहीं है । हम सभी एक-दूसरे से संबद्ध हैं । यहाँ एक

## परिचय

**जन्म :** १५ अक्तूबर १९३१ धनुषकोडी, रामेश्वरम, (तमिळनाडु)

**मृत्यु :** २७ जुलाई २०१५ शिलांग, (मेघालय)

**परिचय :** भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, अभियंता और भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. कलाम 'मिसाइल मैन' के नाम से प्रख्यात थे ।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'इंडिया माय ड्रीम, एन विजनिंग एन एंपावर्ड नेशन : टेक्नालॉजी फॉर सोसायटल ट्रांसफार्मेशन' (चिंतन परक रचनाएँ),
विंग्स ऑफ फायर, साइंटिस्ट्ट प्रेसिडेंट (आत्मकथात्मक रचनाएँ) आदि ।

## गद्य संबंधी

**साक्षात्कार :** दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत एवं विचारों का आदान-प्रदान साक्षात्कार कहलाता है । इसमें एक या कई व्यक्ति किसी एक व्यक्ति से प्रश्न पूछते हैं और वह व्यक्ति इन प्रश्नों के उत्तर देता है या इनपर अपनी राय व्यक्त करता है ।

प्रस्तुत साक्षात्कार में डॉ. कलाम जी ने संसार, ब्रह्मांड, मानवता, मैं की वास्तविकता, आत्मा आदि विविध विषयों पर बड़ी ही गहराई से अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

जीव को दूसरे जीव से उसी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता है, जैसे हवा से झोंके को ।

**अरुण** : कितना सुंदर विचार है-शाश्वत अंतर्संबद्धता ! जन्म से भी पहले घटित हुई घटनाओं का प्रभाव अब भी आपके ऊपर है और जो लोग आपसे पहले हुए हैं, वे भी किसी-न-किसी रूप में आपके साथ हैं ।

**डॉ. कलाम** : इस शाश्वत अंतर्संबद्धता का अर्थ है-जहाँ एक का अंत होता है वहीं से दूसरा आरंभ भी होता है ।
केवल उस समय हमें इसका ज्ञान नहीं होता । सभी प्राणियों में कुछ गहन और व्यापक अर्थ निहित होता हैं, जिससे प्रायः हम अनभिज्ञ होते हैं ।

**अरुण** : जैसे सूँड़ी (Caterpiller) को प्राण त्यागते समय तितली के रूप में अपने पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं होता है ।

**डॉ. कलाम** : इसका बोध होना कि हम सभी एक भव्य आकृति का हिस्सा हैं, बड़ा जरूरी है । यह ब्रह्मांड किसी निश्चित प्रयोजन के बिना न तो बना है, न ही चल रहा है । हम सभी को इस महानाटक में एक पात्र की भूमिका में स्वयं अपना-अपना कार्य करने में विश्वास रखना होगा ।

**अरुण** : बड़ा कठिन है । यहाँ चारों ओर इतना दुःख-दर्द और कठिनाइयाँ हैं । कैसे किसी को यह एहसास हो पाएगा कि वे एक महानाटक के पात्र के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं ?

**डॉ. कलाम** : यथार्थ के संबंध में निजी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का कोई महत्त्व नहीं होता । यह विवश मानसिकता के चलते किए गए दंभ प्रदर्शन की तरह निरर्थक है । दुनिया में दुःख, दर्द और कठिनाइयों के साथ-साथ कितना प्रेम, सौंदर्य और आनंद भी तो है । जब हम अपने चारों ओर व्याप्त सौंदर्य और आनंद की ओर से अपनी आँखें बंद कर लेते हैं तो अंततः हम कष्ट ही भोगते हैं । मनुष्य जीवन एक साहस भरी अस्मिता है, जिसकी अनुभूति पाने के लिए हमें अपने जीवन के प्रति पारदर्शी बनना ही होगा ।

**अरुण** : तो लोग ऐसा करते क्यों नहीं हैं ?

**डॉ. कलाम** : क्योंकि हम भ्रमवश स्वयं को ही अपने जीवन का केंद्र मान बैठते हैं । ऐसी स्थिति में हम सदैव इस उम्मीद में रहते हैं कि दुनिया-समाज में होने वाला प्रत्येक कार्य हमारे अनुकूल और हमारे लाभ के लिए ही हो ।

**संभाषणीय**

डॉ. जयंत नारळीकर जी द्‌वारा लिखित विज्ञान कथाओं को पढ़िए और इसपर चर्चा कीजिए ।

**मौलिक सृजन**

विज्ञान के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का विवरण देते हुए नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए सुझाव दीजिए ।

**श्रवणीय**

यू ट्यूब पर डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के भाषण सुनिए ।

**मैं हूँ यहाँ**

https://youtu.be/obWHem4K03w

**अरुण** : ऐसी उम्मीद करना तो मनुष्य की स्वाभाविक सोच है ।

**डॉ. कलाम** : इसे सामान्य तो कहा जा सकता है, पर किसी भी प्रकार से स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता । मनुष्य जन्म के समय दुनिया में अपने लिए क्या लेकर आता है ? क्या हम सभी इस दुनिया में खाली हाथ, निर्वस्त्र अवस्था में रोते हुए नहीं आते ?

**अरुण** : ✲ जी, लेकिन हम अपने आनुवांशिक गुण-धर्म तो लेकर आते हैं ।

**डॉ. कलाम** : लाता कौन है ? वह तो स्वयं आते हैं । यही तो मनुष्य के जीवन, मानवता का तत्त्व है । दुनिया में आने पर जल्दी ही इस तत्त्व को एक नाम देकर उम्मीदों और जिम्मेदारियों तथा मोह-माया के जाल में जकड़ दिया जाता है ।

**अरुण** : जी हाँ ! इस प्रकार मानवता का अस्तित्व एक व्यक्ति के रूप में उपस्थित होता है । प्रत्येक शिशु के अंदर से एक अद्‌वितीय अस्मित का प्रादुर्भाव होता है ।

**डॉ. कलाम** : क्या अद्‌वितीय ? वही घिसे-पिटे खाँचे-मुखौटे ! या कहें कि शायद मूलभूत मानवता से टूटे, भटकते पिंजर । मानवता के मूल से मानव जीवन यह भटकाव ही जीवन के दुःखों और कठिनाइयों का प्रमुख कारण है । ✲

**अरुण** : हम अपने मूल-तत्त्व से किस प्रकार संबंध स्थापित कर सकते हैं ?

**डॉ. कलाम** : हम अपनी वाणी, विचारों, भावनाओं और कार्यों को एक लय में बद्‌ध कर, ईश्वर की इच्छा के साथ उसकी ताल मिलाकर ऐसा कर सकते हैं ।

**अरुण** : यह दुष्कर तो नहीं होना चाहिए !

**डॉ. कलाम** : मेरा विश्वास है कि मेरा वास्तविक अस्तित्व मेरा मूल तत्त्व है । मेरी पहचान तो बस एक नामपट्‌टिका है, जिसे मुझ पर लगा दिया गया है । कभी-कभी तो यह बस एक मुखौटा भर रह जाता है ।

**अरुण** : तो इस 'मैं' की हकीकत क्या है ?

**डॉ. कलाम** : वास्तव में 'आत्मा' शब्द ही मुझे मनुष्य के वास्तविक अस्तित्व की सर्वोत्तम व्याख्या प्रतीत होता है । इस नाम से संबंध जुड़ते हैं और समाज में अपनी एक पहचान बनती है । यह प्रक्रिया अनवरत रूप से रिश्ते-नातों के ताने-बाने और जीवन के जाल-जंजाल बुनती जाती है ।

**अरुण** : व्यक्तित्व निश्चय ही सांसारिक है, जिसे भगवान् बुद्‌ध ने 'नाम' और 'रूप' की संज्ञा दी थी ।

✲ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :-

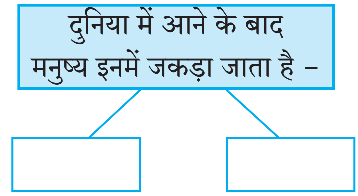


(२) कारण लिखिए :
मनुष्य जीवन में दुख और कठिनाइयाँ आना

(३) (क) उपसर्ग तथा प्रत्ययुक्त शब्द लिखिए :
१. उपसर्गयुक्त ____________
२. प्रत्यययुक्त ____________

(ख) वचन बदलिए ।
(१) कठिनाइयाँ = ..........
(२) उम्मीद = ..........
(३) एक = ..........
(४) व्यक्ति = ..........

(४) 'मानवता जीवन का मूल आधार है', स्पष्ट कीजिए ।




'एक संवेदनशील युवा नागरिक होने के नाते विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में अपनी भूमिका स्पष्ट कीजिए ।

**डॉ. कलाम** : ऋषि अष्टावक्र ने अपनी 'अष्टावक्र गीता' में लिखा है-''आप न तो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु हैं और न ही आकाश हैं । आप स्वयं को बस चेतना की अंतर्वस्तु, इन पाँच तत्त्वों का साक्षी भर मानें ।''

**अरुण** : एक साक्षी मात्र ! तो फिर यह चेतना क्या है ? उसका वास कहाँ है ?

**डॉ. कलाम** : चेतना रचना अथवा निर्माण की वस्तु नहीं है । यह तो शाश्वत है, अनंत है । इसका क्रम सतत और अविच्छिन्न है । यह मन और मस्तिष्क से परे है ।

**अरुण** : आत्मा के संबंध में 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' में भी लिखा हुआ है- ''आत्मा अदृश्य, अचिंत्य और निर्विकार है । यह अनंत है और सब में विद्‌यमान है । इसे न शस्त्र वेध सकता है, न अग्नि जला सकती है, न जल गीला कर सकता है और न वायु सुखा सकती है । यह अजर और अमर है ।''

**डॉ. कलाम** : हाँ, सचमुच । पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुष्य की उत्पत्ति के माध्यम से इस अलौकिक अविच्छिन्नता की धारणा विश्व के सभी प्रमुख धर्मों में समाविष्ट है ।

## शब्द संसार

**अनभिज्ञ** (वि). = अपरिचित, अनजान
**दंभ** (पुं.सं) = अभिमान
**पिंजर** (पुं.सं) = हड्‌डियों की ठठरी
**चेतना** (स्त्री.सं) = सजगता
**शाश्वत** (वि.) = जो सदा बना रहे, नित्य
**अविच्छिन्न** (वि.) = अटूट, लगातार चलने वाला
**अचिंत्य** (वि.) = जिसका चिंतन न हो सके, कल्पनातीत
**प्रतीत** (वि.) - ज्ञात, विदित

## पाठ से आगे

'वैज्ञानिकता की दौड़ में बिखरते हुए मानवीय रिश्ते' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

## पाठ के आँगन में

**(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(क) संजाल

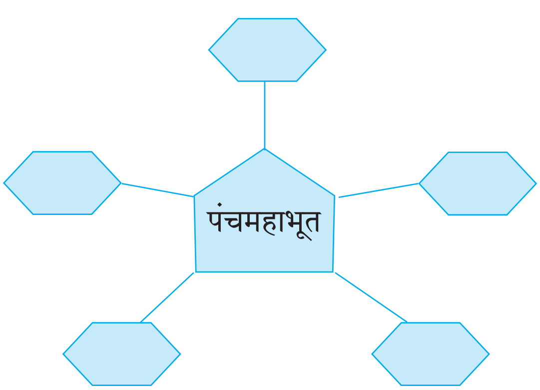


(ख) कृति कीजिए: -

बाह्‍य संसार के संचालन के नियम

**(२) पाठ में आए अव्ययों को ढूँढ़िए और उनके भेद बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।**

**(३) 'राष्ट्रहित में आपका योगदान', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।**

## रचना बोध

.............................................................................................
.............................................................................................
.............................................................................................

**भाषा बिंदु**

**छंदः चौपाई, दोहा, सोरठा पढ़िए और समझिए :-**

**छंद**

- अक्षरों की संख्या
- मात्रा गणना
- यति-गति से सबद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य-रचना ।

उदा.

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं । कबहुँ न यसि रिसि कीन्हि गुसाईं ।।
यहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ बोले वृषकेतू ।।

**चौपाई**

उदा.

नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस जामिनि जिमि जाही ।।
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गन गुन गावन लागे ।

- मात्रिक समछंद
- प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ
- चरण के अंत में जगण (ISI) और नगण (III) का आना वर्जित ।
- तुक पहले की-दूसरे से, तीसरे की-चौथे से ।
- गति प्रत्येक चरण के अंत में ।

**दोहा**

- अद्‌र्ध सममात्रिक छंद
- चार चरण
- पहले-तीसरे चरण में १३-१३ मात्राएँ ।
- दूसरे -चौथे में ११-११ मात्राएँ
- पहल-तीसरे के प्रारंभ में जगण नहीं
- दूसरे -चौथे के अंत में गुरु और लघु

उदा.

श्री गुरु चरण सरोज रज,
निज मन मुकुर सुधार ।
बरनौ रघुवर विमल जस,
जो दायक फल चार ।।

**सोरठा**

- अद्‌र्ध सममात्रिक छंद
- यह दोहे का उलटा होता है ।
- विषम चरणों में ११ मात्राएँ
- सम चरणों में १३ मात्राएँ
- तुक प्रथम और तृतीय चरण में ।

उदा.

निज मन मुकुर सुधार, श्री गुरु चरण सरोज रज ।
जो दायक फल चार, बरनौ रघुवर विमल जस ।।

# ६. नवनीत

*– संत तुकाराम*

आसपास

**महाराष्ट्र का प्रसिद्‌ध 'पालखी सोहळा' (पालखी उत्सव) यू ट्यूब पर देखिए और उसका वर्णन कीजिए ।**

**कृति के लिए आवश्यक सोपान :**

- 'पालखी सोहळा' देखने के लिए प्रेरित करें । ● किसी दृश्य का वर्णन करने के लिए कहें ।
- 'पालखी सोहळा' पर कक्षा में चर्चा कराएँ ।

तुकादास राम का, मन में एकहि भाव ।
तो न पालटू आवे, येही तन जाय ।।१।।
तुका रामसूं चिता बाँध राखूं, तैसा आपनी हात ।
घेनु बदरा छोर जावे, प्रेम न छुटे सात ।।२।।
चित सुंचित जब मिले, तब तन थंडा होय ।
तुका मिलना जिन्ह सुं, ऐसा बिरला कोय ।।३।।
चित्त मिले तो सब मिले, नहिं तो फुकट संग ।
पानी पथर एक ही ठोर कोर न भीजे अंग ।।४।।
तुका संगत तिन से कहिए, जिन से सुख दुनाए ।
दुर्जन तेरा तू काला, थीतो प्रेम घटाए ।।५।।
तुका मिलना तो भला, मन सूं मन मिल जाय ।
उपर उपर मीटा घासनी, उन को को न बराय ।।६।।
तुका कुटुंब छोरे रे लड़के, जोरो सिर मुंडाव ।
जब ते इच्छा नहीं मुई, तब तूं किया काय ।।७।।
तुका इच्छा मीट नहीं तो, काहा करे जटा खाक ।
मथीया गोलाडार दिया तो, नहिं मिले फेरन ताक ।।८।।
ब्रीद मेरे साइयाँ को, तुका चलावे पास ।
सुरा सोहि लरे हम से, छोरे तन की आस ।।९।।
कहे तुका भला भया, हुआ संतन का दास ।
क्या जानू केते मरता, न मिटती मन की आस ।।१०।।
तुका और मिठाई क्या करूँ, पाले विकार पिंड ।
राम कहावे सो भली रूखी, माखन खीर खांड ।।११।।

## परिचय

**जन्म :** खोजकर्ताओं के अनुसार आपका जन्म १६०८ के बीच देहू, पुणे (महाराष्ट्र)
**मृत्यु :** १६५०
**परिचय :** संत तुकाराम एक महान संत और कवि थे । वे सत्रहवीं शताब्दी के भारत में चल रहे भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे । संत तुकाराम जी धर्म संरक्षण के साथ-साथ पाखंड के खंडन का कार्य निरंतर रूप से किया । आपके 'अभंग' अंग्रेजी भाषा में भी अनूदित हुए हैं ।
**प्रमुख कृतियाँ :** 'अभंग वाणी' आपकी प्रमुख कृति है ।

## पद्‌य संबंधी

**दोहरे :** कबीरदास जी के दोहे भी तुकाराम जी के समय महाराष्ट्र में भली-भाँति प्रचलित थे । तुकाराम जी ने भी कुछ दोहरे बनाए । हिंदी दोहरों की दृष्टि से इनमें छंदोभंग तो पद-पद पर है पर तुकाराम जी की अभंग कविता को किसी भंग का डर ही न था । इन दोहरों का भी आस्वाद लीजिए ।

प्रस्तुत दोहरों में तुकाराम जी ने हमें नीति संबंधी उपदेश दिए हैं । ये चरित्र संवर्धन में सहायक हो सकते हैं ।

## शब्द संसार

**बिरला** (वि.) = अलग, निराला
**थीतो** (पुं.दे.) = स्थित
**मुंडाव** (पुं.दे.) = मुंडन
**विकार** (पुं.सं.) = बिगाड़; दोष, खराबी

## कल्पना पल्लवन

'तुकाराम जी संत ही नहीं समाज सुधारक भी थे', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

## लेखनीय

किसी महिला संत का कोई पद सुंदर अक्षरों में भावार्थसहित लिखिए ।

## पठनीय

महाराष्ट्र की संत परंपरा पर भाषण पढ़कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

## श्रवणीय

'खरा तो एकचि धर्म' यह कविता सुनिए और सस्वर गायन कीजिए ।

## संभाषणीय

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर विविध संतों के बारे में कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए ।

- महाराष्ट्र संतों की भूमि
- विविध संतों के नाम और काल
- सुवचन
- ग्रंथ संपदा

## पाठ के आँगन में

**(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :

शरीर में विकार उत्पन्न करने वाले व्यंजन

- ..........
- ..........
- ..........

(ख) कविता से निम्न शब्दों के अर्थवाले शब्द लिखिए :

- शरीर – ..........
- कौन – ..........
- निराला – ..........
- लंबे बाल – ..........

**(२) चित्त समाधान के लिए साधना स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ स्पष्ट कीजिए ।**

**(३) संत तुकाराम के किन्हीं चार दोहरों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।**

## पाठ से आगे

कविवर्य रवींद्रनाथ टैगोर जी की हिंदी में अनूदित कविता पढ़िए ।

## रचना बोध

..............................................................................
..............................................................................
..............................................................................

# ७. सपनों से सत्य की ओर

*– आनंद बनसोडे*

## पूरक पठन

आनंद बनसोडे जी ने अपने बचपन की असफलता के दौर में संसार के सबसे ऊँचे शिखर मांउट एवरेस्ट पर जाने का स्वप्न देखा । 'कठिन से कठिन समय में संकटों पर मात करने वाला इनसान ही जीवन में इतिहास रच पाता है ।एक स्वप्न और उसपर रखी हुई असीम श्रद्‌धा मनुष्य को कई चमत्कारिक तथा आश्चर्यजनक बातें दिखाती है' यही आनंद बनसोडे ने अपने भाषण में बताई है । ''ध्यास हिमशिखरों का-सपनों से सत्य की ओर'' किताब में आनंद ने अपने जीवन की कहानी बताई है । अपने सपनों के दौर में उन्हें अमेरिका, इग्लैंड, जर्मनी, रुस, ऑस्ट्रेलिया और उसके बाद पाँच महाद्‌वीपों की यात्रा करने का अवसर मिला और अंततः संसार के सबसे ऊँचे शिखर माउंट एवरेस्ट पर पहुँचकर के श्री के सामने नतमस्तक होने का सौभाग्य मिला। उन्होंने स्कूल और कॉलेज के बच्चों को प्रेरित करने का आंदोलन शुरू किया है । 'सपनों पर अपार निष्ठा तथा प्रेम संसार के किसी भी मनुष्य को अपने सपने साकार करने से रोक नहीं सकता' यही बात आनंद अपने भाषण में बताते हैं । जगह-जगह जाकर बनसोड़े जी युवकों को मुसीबतों से घबराकर पीछे न हटने की प्रेरणा देते हैं । वे आज नवयुवकों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं । उनके भाषण के कुछ अंश प्रस्तुत पाठ में संकलित हैं ।

माँ ने मुझे बचपन में कहा था, ''जिंदगी में भले ही सफलता ना मिले किंतु अच्छा इनसान बनने की हर कोशिश करते रहना.... मुझे तुम पर नाज होगा कि तुमने संसार का सबसे मुश्किल काम किया है ।'' मैं बचपन से सपने देखने वाला लेकिन शरीर से कमजोर और पढ़ाई में भी बिलकुल निकम्मा था । हरदम अकेला रहना पसंद करता था । मेरा जन्म एक अँधेरी झोंपड़ी में हुआ । मेरा बचपन अभावों से भरा था । आज के बच्चों की तरह कई-कई कपड़े, घूमने-फिरने के साधन, खेलने के खिलौने, टी.वी, फोन आदि के बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते थे । पूरे परिवार का जीवन कष्टमय था । साइकिल तथा गाड़ी के पहियों की पंक्चर निकालकर मेरे पिता जी अशोक बनसोडे अपनी तीन बेटियों तथा मेरी परवरिश करते थे । पढ़ाई में कमजोर होने के कारण मुझे हर जगह अपमान का सामना करना पड़ता था । इसलिए मेरा एकमात्र शौक था सपने देखना एकांत में सोचता था कि ''मैं संसार के सबसे ऊँचे शिखर पर पहुँच जाऊँ जहाँ मेरा अपमान करने कोई न आए।'' आज के युवक थोड़े से अपमान से हार जाते हैं लेकिन दुनिया का इतिहास यह बताता है कि आजतक दुनिया के बड़े व्यक्तियों ने अपमान सहकर खुद

### परिचय

**जन्म :** २९ जुलाई १९८५, सोलापुर (महाराष्ट्र)

**परिचय :** आनंद बनसोडे जी ने माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करके विश्व के चार महाद्‌वीपों के चार सर्वोच्च शिखरों को फतह कर विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित किया है । आपने अनुभवों पर आधारित भाषणों द्‌वारा लोगों को प्रेरित करने का काम किया है ।

**प्रमुख कृतियाँ :** ध्यास उत्तुंग, हिमशिखरांचा, स्टेपिंग स्टोन टू सक्सेस, स्वप्नातून सत्याकडे, स्वप्नपूर्तिचा खजिना, नालंदा आदि ।

### गद्‌य संबंधी

**भाषण :** समाज को प्रेरित करने के लिए समूह के सामने मौखिक मुखर अभिव्यक्ति को भाषण कहा जाता है ।

प्रस्तुत भाषण में बनसोडे जी ने अपने अनुभवों के आधार पर युवकों को मुसीबतों से हार न मानने तथा जीवन में सदैव संघर्ष के लिए तत्पर रहने हेतु प्रेरित किया है ।

मुकाम हासिल किया है ।

पढ़ाई में बहुत ही कमजोर होने के कारण मैं नौवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया । कुछ समय पढ़ाई छोड़कर मैंने अपने पिता जी के साथ काम पर जाना शुरू किया परंतु माँ की प्रेरणा से मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सका । मेरी माँ पार्वती ने बचपन से ही बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया इसलिए मैं दसवीं कक्षा में स्कूल में दूसरे नंबर से उत्तीर्ण हो गया ।

आप के बीच ऐसे कई बच्चे होंगे जो पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अपने आप को कमतर समझते हैं । उनको यही लगता होगा कि अब सब कुछ खत्म हो चुका । लेकिन मैं उनको यह बताना चाहता हूँ कि 'आप क्या हैं और कहाँ से आए हो ये बात महत्त्वपूर्ण नहीं है । आपको कहाँ जाना है यह अगर आपको पता होगा तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको रोक नहीं सकती । आप अभी क्या हो इसके अलावा जीवन में क्या करना है इस बात पर आपको ध्यान देना है ।''

बारहवीं साइंस उत्तीर्ण होने के बाद मैंने बी. एससी. के लिए प्रवेश ले लिया । अब मुझे बचपन से देखा हुआ 'दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने' का सपना पूरा करना था । सोलापुर जैसे सतही प्रदेश में जहाँ गिर्यारोहण का नाम तक नहीं लिया जाता, ऐसे स्थान पर रहकर मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई की पूछताछ करता था और काफी सारी खोजबीन करने के बाद मेरी भेंट 'पिंपरी-चिंचवड माउंटेनिअरिंग असोसिएशन' के सेक्रेटरी सुरेंद्र शेळके जी से हो गई । पहली ही मुलाकात में मैंने उनसे कहा कि, ''मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई करना चाहता हूँ ।''

मैंने अपने गुरु शेळके सर के मार्गदर्शन में माउंट एवरेस्ट शिखर की चढ़ाई के लिए माउंटेनिअरिंग कोर्स की तैयारी शुरू की । मुझे इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। बचपन से ही मेरी शारीरिक स्थिति कमजोर थी । इसलिए मुझे अपनी शारीरिक कसरत पर ध्यान देना जरूरी था । मुझे पता था कि मेहनत से ही मैं अपना लक्ष्य पूरा कर सकता हूँ । कोर्स का शुल्क कम होने पर भी मुझे अपनी माँ के गहने गिरवी रखने पड़े । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैंने ''नेहरू इन्स्टिट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग'' उत्तरकाशी (उत्तराखंड) से माउंटेनियरिंग का कोर्स पूरा किया । वहाँ मुझे कई नई-नई बातें सीखने का अवसर मिला । एक बार तो कोर्स की तकलीफों से तंग आकर मैंने कोर्स अधूरा छोड़कर वापस लौट आने की बात भी सोची थी । तभी फोन पर मेरी माँ ने मुझसे कहा, 'मुझे अपने दूध पर पूरा भरोसा है । वह इतना कमजोर नहीं पड़ सकता ।' इस बात को सुनकर मुझे बहुत प्रेरणा मिली । तब से अपने जीवन में जब भी पीछे हटने का खयाल मेरे दिमाग में आता है तो मुझे अपनी माँ के वे शब्द याद आते हैं । इसी कोर्स के दौरान मेरी मित्रता एक अमेरिकन नागरिक स्टीव के साथ

**श्रवणीय**

विश्वास नांगरे पाटील जी के प्रेरणादायी भाषण सुनिए ।

**पठनीय**

'शेरपा तेनसिंग' की माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की कहानी पढ़िए ।

हो गई ।

इस कोर्स में मुझे 'बी' ग्रेड मिल गई । मैं बहुत निराश हो गया । इसी के दौरान मैंने विपश्यना ध्यान साधना का भी अध्ययन किया । दूसरी बार मुझे बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स के लिए जाना था लेकिन मेरे परिवार से ही विरोध हुआ, तब मुझे घर से भागकर कोर्स के लिए जाना पड़ा । ''हिमालयन माउंटेनियरिंग इन्स्टिट्यूट', दार्जिलिंग के कोर्स में मुझे'ए' ग्रेड मिल गई । इसी वर्ष उसी इन्स्टिट्यूट में एडव्हांस कोर्स को 'बी' ग्रेड मिल गई । बी.एस.सी. के बाद मैने सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में एम.एससी. पदार्थ विज्ञान के लिए प्रवेश ले लिया । होस्टल में रहते हुए मैंने एक सपना देखा कि मैं एक बहुत ऊँचे शिखर पर चढ़कर तिरंगा फहरा रहा हूँ । इस सपने के कारण मैं फिर एक बार बेचैन हो गया । एम.एससी. की परीक्षा के बाद मैं फिर एडवान्स कोर्स के लिए मनाली चला गया । इस कोर्स के लिए भी मुझे झूठ बोलकर ही जाना पड़ा था । इस कोर्स के बाद तुरंत मैं एक बंगाली टीम के साथ टी-२ शिखर चढ़ाई के लिए निकल पड़ा । लेह-मनाली हाईवे के पाटसिओ से कुछ भीतर की ओर जो वर्जिन शिखर है, उसकी चढ़ाई मुश्किल थी । वर्जिन की चढ़ाई करने के लिए मेरे साथ सात बंगाली और दो शेरपा जुड़ गए । २०१० में लेह में बादल फट जाने, तथा ३-४ दिन लगातार बारिश होने के कारण मैं और मेरी टीम बेसकैंप से १६००० फीट की उँचाई पर ही अटक गई । बंगाली टीम के लीडर ने वापस लौटने का निर्णय लिया लेकिन मेरा इरादा शिखर चढ़ने का था । कुछ समय के लिए मौसम साफ हो गया और मैं तथा मेरी टीम चढ़ाई के लिए आगे बढ़ गई । टीम के अन्य लोगों ने बहुत थकान के कारण आगे की चढ़ाई बीच में ही छोड़ दी किंतु मैंने दो शेरपाओं की मदद से वर्जिन शिखर पर पहला कदम रखा । इस उपलब्धि के साथ ''टी-२'' शिखर पर चढ़ने वाला मैं पहला व्यक्ति बन गया । मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि सपने नींद में देखे हों या खुली आँखों से उनपर दृढ़ विश्वास रखने से ही सपने साकार होते हैं । अगर आपका अपने सपनों पर विश्वास है तो प्रकृति भी आपकी मदद करती है ।

इस सफलता के बाद मैंने सुरेंद्र शेळके जी की सहायता से एवरेस्ट २०११ की तैयारी का आरंभ किया । इस एवरेस्ट फतह के लिए मुझे २० से २५ लाख रुपयों की आवश्यकता थी, जिसको पूरा करना मेरे परिवार के लिए असंभव था।

मेरा अमेरिकन मित्र स्टीव मेरे सपनों के संघर्ष से अवगत था । उसने मुझे अमेरिका बुलाया । जीवन के बड़े-बड़े फैसले अंत:प्रेरणा से किए जाते हैं । इसी अंत:प्रेरणा से मैंने अमेरिका जाने का फैसला लिया । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैं अपने फैसले पर अडिग रहा । आखिर जुलाई

**लेखनीय**

'हिमालय पर्वत की बर्फ पिघल कर खत्म हो जाए तो' इसपर अपने विचार लिखिए ।

**आसपास**

'एवरेस्ट' नाम क्यों पड़ा, जानकारी प्राप्त कीजिए ।

२०११ में मेरे अमेरिका जाने का दिन आ गया सुबह तीन बजे मेरे हवाई जहाज ने आकाश में उड़ान भरी । मैंने नीचे देखा । सारी मुंबई निद्रावस्था में थी और मैं जाग रहा था । मेरे सपनों को पंख मिल गए , 'अग्निपंख' । मुझे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का कथन याद आया –

'चिंता न करो, क्षोभ ना करो,
खेद न करो, कुछ करने का अवसर मिला है ।
अभी सर्वोत्तम होना शेष है,
अभी सर्वोत्तम किया ही नहीं ।'

अमेरिका में रहते मैंने १५ अगस्त २०११ को कैलिफोर्निया के माउंट शास्ता शिखर की चढ़ाई कर वहाँ मैंने अपने देश का राष्ट्रगीत बजाया । यहीं पर रहकर मैंने स्कूबा डाईविंग भी सीख ली । पैसिफिक महासागर के किनारे बाईक चलाते हुए बाईक एक्सपिडीशन भी कर ली । छह महीने अमेरिका में रहने के बाद मैंने सबसे भावभीनी विदा ली और एवरेस्ट मुहिम के लिए थोड़ी राशि समेटकर मैं भारत लौट आया ।

*भारत में आकर हालात फिर वही थे । एवरेस्ट के लिए जितने पैसे आवश्यक थे उतने मेरे पास नहीं थे । आखिर मेरे पिता जी ने अपना घर गिरवी रखा । माँ और बहनों ने अपने गहने बेच दिए और जीजा जी ने ऋण ले लिया । सब कुछ दाँव पर लगाकर मैं एवरेस्ट चढ़ाई के लिए निकल पड़ा ।

काठमांडू से एवरेस्ट जाते समय 'नामचे बाजार' से एवरेस्ट शिखर का प्रथम दर्शन हुए। मैंने पुणे की टीम 'सागरमाथा गिर्यारोहण संस्था' के साथ इस मुहीम पर था । बहुत जल्द हमने १९००० फीट पर स्थित माउंट आयलैड शिखर पर चढ़ाई की । इसके बाद हम एवरेस्ट बेसकैंप में पहुँचे । चढ़ाई के पहले पड़ाव पर सागरमाथा संस्था के अध्यक्ष रमेश गुळवे जी को पक्षाघात का दौरा पड़ा । उन्हें वैद्‌यकीय उपचार के लिए काठमांडू से पूना ले गए किंतु उनका देहांत हो गया। मैं और मेरे साथियों पर मानो दुख का एवरेस्ट ही टूट पड़ा । फिर भी हमने आगे बढ़ने का निर्णय लिया । *

बर्फ की चोटियाँ, हिमनद, आँधी-तूफान, हड्डियाँ जम जाए इतनी ठंड आदि का सामना करते हुए एवरेस्ट कैंप-१, कैंप-२ तक चढ़ाई करने में टीम सागरमाथा सफल हुई । १६ मई को एवरेस्ट कैंप-२ पर भारत का राष्ट्रगीत बजाकर मैंने विश्व रिकार्ड बनाया । उसके बाद मेरी सेहत बिलकुल बिगड़ गई । इसलिए मुझे नीचे डोंगबोचे नामक स्थान पर भेजा गया । वहाँ मैं बहुत हताश होकर बैठ गया था । वह अत्यंत बुरा क्षण था । जिन सपनों का पीछा मैं बचपन से कर रहा था उसमें मुझे असफलता मिलने वाली थी । आखिर मैंने ''विपश्यना'' से अपनी साँसों पर नियंत्रण

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :
परिच्छेद में प्रयुक्त रिश्ते
[ ] [ ] [ ]

(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शहरों के नाम :
(अ) [ ] (ब) [ ]

(३) (क) परिच्छेद में आए सर्वनामों की सूची तैयार कीजिए ।
(ख) परिच्छेद से समुच्च्यबोधक अव्यय ढूँढकर लिखिए ।

(४) परिच्छेद से प्राप्त प्रेरणा लिखिए ।